मधुबन ओम् शान्ति अंक 372 जुलाई 2023

पत्र-पुष्प

"विश्व नव निर्माण के लिए निर्मानता का गुण धारण करो, निर्मल (स्वच्छ) बनो" (20-06-23)

परमप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा निर्मल और निर्मान स्वभाव वाले, सदा प्रसन्नचित्त स्थिति में रह सबको शीतलता की छाया देने वाले, विश्व नव निर्माण के निमित्त बनी हुई देश विदेश की सभी निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - हम सभी ब्राह्मण बच्चों के दिल में जून मास में मीठी जगदम्बा माँ की विशेष स्मृतियां रहती हैं। मीठी माँ ने हम सभी बच्चों को सदा फालो फादर करने की प्रेरणायें दी। जैसे स्वयं हाँ जी का पाठ पक्का किया, हर घड़ी को अन्तिम घड़ी समझ एवररेडी रही और नम्बरवन में चली गई, ऐसे हम सभी उनके कदमों पर कदम रखते हुए बाप समान सम्पन्न, सम्पूर्ण बनने की रेस कर रहे हैं। अभी फिर यह जुलाई मास मीठी दीदी मनमोहिनी जी की स्मृतियों का मास है। उन्होंने दृढ़ता के साथ हर ईश्वरीय नियम और मर्यादा का पालन किया और कराया। उनके जीवन में आलस्य और अलबेलेपन का नामनिशान भी नहीं था। अमृतवेले से रात तक दिनचर्या में सदा एक्यूरेट रही, अलर्ट रही। हर एक को पिताव्रता और सतीव्रता का पाठ पक्का कराया। अन्तिम समय में ''अब घर जाना है'' सदा इसी स्मृति में रह उपराम, न्यारी-प्यारी बनकर सम्पन्न बन गई। ऐसी पूर्वज आदि रत्न आत्माओं की अलौकिक पालना का रिटर्न अभी हम सबको करना है।

समय प्रमाण अभी विश्व नव निर्माण के महान कार्य को सम्पन्न करने के लिए बाबा कहते बच्चे, निर्मल और निर्मान बनो। जैसे ब्रह्मा बाप के हर बोल में नम्रता, मधुरता और महानता स्पष्ट दिखाई देती थी, सदा करावनहार की स्मृति से हर कर्म में न्यारे और निरहंकारी बनकर रहे। ऐसे हम सभी के हर कर्म में नम्रतापन के नव-निर्माण की श्रेष्ठता भरी हुई हो। हर सेकेण्ड, हर संकल्प सम्पूर्ण पवित्र अर्थात् स्वच्छ हो। बोलो, ऐसा ही लक्ष्य रख स्व और सेवाओं का बैलेन्स रख सदा आगे बढ़ते रहते हो ना!

अभी जुलाई-अगस्त मास जबकि भारत में चारों ओर बरसात की रिमझिम रहती है, ऐसे समय पर हम सबको विशेष तपस्या करनी है, योग अग्नि से अपने पुराने संस्कारों को, विकर्मों को भस्म करना है। साथ-साथ अपनी श्रेष्ठ जीवन से, चलन और चेहरे से परमात्म प्रत्यक्षता के निमित्त बनना है।

मधुबन में तो इस समय लगातार नये पुराने बाबा के बच्चों की बहुत अच्छी रिमझिम चल रही है। एक ओर राजयोग शिविर में हजारों की संख्या में बाबा के नये-नये बच्चे मधुबन घर की अलौकिक अनुभूतियां कर रहे हैं। दूसरी ओर अलग-अलग विंग्स के सेमीनार वर्कशाप आदि चलती रहती हैं और तीसरे तरफ योग तपस्या में भी अनेक भाई बहिनें बहुत उमंग-उत्साह से आ रहे हैं। बाबा अपने बच्चों को हर प्रकार से ज्ञान योग के खजाने से भरपूर कर रहे हैं। जुलाई मास से शान्तिवन में टीचर्स बहिनों की, समर्पित भाईयों की, कुमार, अधरकुमार, माताओं आदि की योग भट्ठियां रखी गई हैं। हर एक बाबा के बच्चे को लगन है कि मुझे स्वयं को सम्पन्न बनाकर समय को समीप लाना है। इसी लक्ष्य से सभी मधुबन में आते और बहुत अच्छे अनुभव करके जाते हैं। अच्छा -

आप सबका स्वास्थ्य ठीक होगा। सभी को बहुत-बहुत याद....

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

निर्मल और निर्मान बन विश्व नव-निर्माण करो

1) अपने स्वभाव को निर्मल (शीतल शुद्ध) बना दो तो हर कार्य में सफलता मिलती रहेगी। अभी निर्मल स्वभाव के ऊपर विशेष अण्डरलाइन करो। कुछ भी हो जाए लेकिन अपना स्वभाव सदा निर्मल रहे। 'निर्मल स्वभाव' अर्थात् बिल्कुल शीतल, शुद्ध। कोई भी बात जोश दिलाने वाली हो लेकिन आप निर्मल रहो। परिवर्तन शक्ति के आधार पर सेकण्ड में बिन्दी लगा दो, अन्दर हलचल न हो तब कहेंगे निर्मल और निर्मान।

2) जिन बच्चों का स्वभाव निर्मल हैं। वह विचार देने लेने में सहज होंगे, किसी भी सेवा में विघ्न रूप नहीं बनेंगे। उन्हें यह संकल्प भी नहीं आयेगा कि मेरा विचार, मेरा प्लैन, मेरी सेवा इतनी अच्छी होते हुए भी मेरा क्यों नहीं माना गया... यह मेरापन आना भी अलाय मिक्स होना है।

3) जो बच्चे सदा निर्मल और निर्मान स्वभाव वाले हैं उनके मन-बुद्धि में व्यर्थ की गति फास्ट नहीं होगी। वे निर्मल और निर्मान होने के कारण सभी को प्रसन्नचित्त की छाया में शीतलता देंगे। कैसा भी आग समान जलता हुआ, बहुत गरम दिमाग का हो लेकिन प्रसन्नचित्त के वायब्रेशन की छाया उसे शीतल बना देगी।

4) आप पूर्वज और पूज्य आत्माओं के यादगार में भी नयन सदा निर्मल दिखाते हैं। कभी भी अभिमान या अपमान के नयन नहीं दिखाते। कोई भी देवी वा देवता के नयन निर्मल वा रुहानी होंगे। तो जब कभी किसी के प्रति कोई ऐसा निगेटिव संकल्प आये तो याद रखो कि मैं कौन हूँ! मेरे जड़-चित्र भी रुहानी नैनधारी हैं तो मैं तो चैतन्य हूँ?

5) जो नम्रचित, निर्मल स्वभाव वाले हैं, उन्हें कभी भी स्व की सफलता का अभिमान नहीं होगा। वर्णन नहीं करेंगे, अपने गीत नहीं गायेंगे। दूसरे उनके गीत गायेंगे लेकिन वह स्वयं सदा बाप के गुण गायेंगे इसलिए कोई कैसा भी हो आप दिल से स्नेह दो, शुभ भावना दो, रहम करो।

6) निर्माणचित आत्मायें कारण वा समस्या को पॉजिटिव समाधान बनायेंगी। उनके चेहरे पर कभी कमजोरी का, कोमलता का चिन्ह नहीं होगा इसलिए निर्मान बनो, कोमल नहीं। कोमल उसे कहते हैं जो पानी का फल हो। ऐसे नहीं पानी डालो और बह जाये वा मुरझा जाए।

7) निर्मान बनना ही स्वमान है और यही सर्व द्वारा मान प्राप्त करने का सहज साधन है। निर्मान बनना झुकना नहीं है लेकिन सर्व को अपनी विशेषता और प्यार में झुकाना है। जितना निर्मान उतना सबके दिल में महान् स्वत: ही बनेंगे। बिना निर्मानता के सर्व के मास्टर सुखदाता बन नहीं सकते। निर्मानता निरहंकारी सहज बनाती है। निर्मानता का बीज महानता का फल स्वत: प्राप्त कराता है।

8) बापदादा सभी बच्चों को विशेष श्रीमत दे रहे हैं - बच्चे बोल में निर्मान बनो। निर्मानता ही महानता है। यह झुकना नहीं है लेकिन सबको अपने ऊपर झुकाना है। यही दुआयें प्राप्त करने का साधन है। सच्चे सेवाधारी को कभी सेवा की सफलता का अभिमान नहीं रहता। जितनी सफलता उतना नम्रचित, निर्मान, निर्मल स्वभाव रहता है।

9) कोई भी चीज़ को गर्म कर नर्म किया जाता है, फिर मोल्ड किया जाता है। यहाँ भी गर्माई है शक्ति रूप और नर्माई है निर्मानता अर्थात् स्नेह रूप। जिसमें हर आत्मा प्रति स्नेह होगा वही नम्रचित रह सकता है। स्नेह नहीं है तो न रहमदिल बन सकेंगे, न नम्रचित। शक्तिरूप में है मालिकपन और नम्रता में है सेवा का गुण। तो जब यह नर्माई और गर्माई दोनों रहेंगे तब हर बात में मोल्ड हो सकेंगे।

10) अपने श्रेष्ठ स्वमान का बुद्धि में जितना नशा रहे उतना कर्म में सदैव नम्रता रहे। जैसे ऊंच-ते ऊंच बाप भी बच्चों के आगे गुलाम बनकर आते हैं तो नम्रता हुई ना! जितना ऊंच उतना ही नम्र–ऐसा बैलेन्स रहे क्योंकि विश्व का कल्याण नम्रता के बिना हो नहीं सकता। बाप को भी अपना तब बनाया जब बाप भी नम्रता से बच्चों का सेवाधारी बना। ऐसे ही फॉलो फादर।

11) तकदीरवान बच्चे हर संकल्प, बोल और कर्म में फालो फादर करते हैं। उनके हर बोल में नम्रता, निर्माणता और महानता होगी। जो अपने को निमित्त समझते हैं उन्हों में महानता के साथ नम्रता अवश्य होगी। अगर नम्रता के बजाय महानता या महानता के बजाय नम्रता ज्यादा है तो भी सफलतामूर्त नहीं बनेंगे।

12) कोई भी कर्म करते करावनहार बाप की स्मृति रहे तो हर

कर्म में न्यारेपन, निरहंकारीपन और नम्रतापन के नव-निर्माण की श्रेष्ठता भरी हुई होगी। हर सेकेण्ड, हर संकल्प सम्पूर्ण पवित्र अर्थात् स्वच्छ होगा, जिसको सच्चाई और सफाई कहते हैं।

13) नमना अर्थात् झुकना - तो जब नमेंगे तब ही सब नमन करेंगे। ऐसे नहीं समझो कि हम तो सदैव झुकते ही रहते हैं लेकिन हमारा कोई मान नहीं, जो झुकते नहीं व झूठ बोलते हैं उनका ही मान है–नहीं। यह अल्पकाल का है, लेकिन आप दूरादेश बुद्धि रखो यहाँ जितनों के आगे झुकेंगे अर्थात् नम्रता के गुण को धारण करेंगे तो सारा कल्प ही सर्व आत्मायें आपके आगे नमन करेंगी। सतयुग त्रेता में राजा के रिगार्ड से मन से झुकेंगे और द्वापर, कलियुग में काँध झुकायेंगे।

14) जैसे वृक्ष के लिये कहते हैं जितना भरपूर होगा उतना झुका हुआ होगा तो जैसे वृक्ष का झुकना सेवा करता है। ऐसे ही निर्मान आत्मायें सबको सुख देने की सेवा करेंगी। जहाँ भी जायेंगी, जो भी करेंगी वह सुखदायी होगा। जितना स्वमान उतना निर्मान। ऐसे नहीं – हम तो ऊंच बन गये, दूसरे छोटे हैं या उनके प्रति घृणा भाव हो, यह नहीं होना चाहिए।

15) शुभ-भावना, शुभ-कामना का बीज ही है - निमित्त-भाव और निर्मान-भाव। हद का मान नहीं, लेकिन निर्मान। कभी भी सभ्यता को छोड़ करके सत्यता को सिद्ध नहीं करना। सभ्यता की निशानी है निर्मानता। यह निर्मानता निर्माण का कार्य सहज करती है। जब तक निर्मान नहीं बने तब तक निर्माण नहीं कर सकते।

16) हर आत्मा के प्रति कल्याण वा रहम की भावना का स्वभाव, हर एक को ऊंचा उठाने का स्वभाव, मधुरता का स्वभाव, निर्माणता का स्वभाव धारण करो। यह स्वभाव आपको सदा हल्का रखेगा। कोई भी बोझ अनुभव नहीं होगा।

17) जो निर्मान होते हैं उनमें रोब नहीं होता है, रूहानियत की झलक होती है। जैसे बाप कितना नम्रचित बनकर आते हैं, स्वयं को वर्ल्ड सर्वेन्ट कहकर बच्चों को अपने से भी आगे रखते हैं, ऐसे फालो फादर। अगर जरा भी सेवा में रोब आता है तो वह सेवा समाप्त हो जाती है।

18) निरहंकारी बनने की विशेष निशानी है - निर्माणता। वृत्ति, दृष्टि, वाणी, सम्बन्ध-सम्पर्क सबमें निर्माणता का गुण धारण करो तो महान बन जायेंगे, जो निर्मान रहता है वह सर्व द्वारा मान पाता है। स्वयं निर्माण बनेंगे तो दूसरे मान देंगे, जो अभिमान में रहता है उसको कोई मान नहीं देते, उससे दूर भागेंगे।

19) सेवाधारी की विशेषता है - एक तरफ अति निर्मान, वर्ल्ड सर्वेन्ट; दूसरे तरफ ज्ञान की अथॉरिटी। जितना ही निर्मान उतना ही बेपरवाह बादशाह। निर्मान और अथॉरिटी दोनों का बैलेंस। निर्माण-भाव, निमित्त-भाव, बेहद का भाव - यही सेवा की सफलता का विशेष आधार है।

20) जितना ही स्वमान उतना ही फिर निर्मान। स्वमान का अभिमान नहीं। ऐसे नहीं – हम तो ऊंच बन गये, दूसरे छोटे हैं या उनके प्रति घृणा भाव हो, यह नहीं होना चाहिए। कैसी भी आत्मायें हों लेकिन रहम की दृष्टि से देखें, अभिमान की दृष्टि से नहीं। न अभिमान, न अपमान। यदि अभिमान नहीं होगा तो अपमान, अपमान नहीं लगेगा। वह सदा निर्मान और निर्माण के कार्य में बिज़ी रहेगा।

21) जो निर्मान होता है वही नव-निर्माण कर सकता है। शुभ-भावना वा शुभ-कामना का बीज ही है निमित्त-भाव और निर्मान-भाव। हद का मान नहीं, लेकिन निर्मान। असभ्यता की निशानी है जिद और सभ्यता की निशानी है निर्मान। निर्मान होकर सभ्यतापूर्वक व्यवहार करना ही सभ्यता वा सत्यता है।

22) नम्रचित, निर्मान वा हाँ जी का पाठ पढ़ने वाली आत्मा के प्रति कभी मिसअन्डरस्टैन्डिग से दूसरों को हार का रूप दिखाई देता है लेकिन वास्तविक उसकी विजय है। सिर्फ उस समय दूसरों के कहने वा वायुमण्डल में स्वयं निश्चयबुद्धि से बदल शक्य का रूप न बने। पता नहीं हार है या जीत है। यह शक्य न रख अपने निश्चय में पक्का रहे। तो जिसको आज दूसरे लोग हार कहते हैं, कल वाह-वाह के पुष्प चढ़ायेंगे।

23) संस्कारों में निर्मान और निर्माण दोनों विशेषतायें मालिक-पन की निशानी हैं। साथ-साथ सर्व आत्माओं के सम्पर्क में आना, स्नेही बनना, सर्व के दिलों के स्नेह की आशीर्वाद अर्थात् शुभ भावना सबके अन्दर से उस आत्मा के प्रति निकले। चाहे जाने, चाहे न जाने दूर का सम्बन्ध वा सम्पर्क हो लेकिन जो भी देखे वह स्नेह के कारण ऐसे ही अनुभव करे कि यह हमारा है।

24) सेवाधारी अर्थात् निर्माण करने वाले और निर्मान रहने वाले। निर्माणता ही सेवा की सफलता का साधन है। निर्मान बनने से सदा सेवा में हल्के रहेंगे। निर्मान नहीं, मान की इच्छा है तो बोझ हो जायेगा। बोझ वाला सदा रूकेगा। तीव्र नहीं जा सकता, इसलिए अगर कोई भी बोझ अनुभव होता है तो समझो निर्मान नहीं हैं।

25) ब्रह्मा बाप ने अपने को कितना नीचे किया - इतना निर्मान होकर सेवाधारी बनें जो बच्चों के पांव दबाने के लिए भी तैयार। बच्चे मेरे से आगे हैं, बच्चे मेरे से भी अच्छा भाषण कर सकते

हैं। 'पहले मैं' कभी नहीं कहा। आगे बच्चे, पहले बच्चे, बड़े बच्चे - कहा तो स्वयं को नीचे करना नीचे होना नहीं है, ऊंचा जाना है। दूसरों को मान देकरके स्वयं निर्मान बनना यही परोपकार है। यह देना ही सदा के लिए लेना है।

26) अल्पकाल के विनाशी मान का त्याग कर स्वमान में स्थित हो, निर्मान बन, सम्मान देते चलो। यह देना ही लेना बन जाता है। सम्मान देना अर्थात् उस आत्मा को उमंग-उल्लास में लाकर आगे करना है। यह सदाकाल का उमंग-उत्साह अर्थात् खुशी का वा स्वयं के सहयोग का खजाना, आत्मा को सदा के लिए पुण्यात्मा बना देता है।

27) हर समय नम्रता की ड्रेस पहनकर रहो। यह नम्रता है कवच। यही सेफ्टी का साधन है। जहाँ नम्रता होगी वहाँ स्नेह और सहयोग अवश्य होगा। सच्चे नशे में रहने वाले सदा नम्रचित होंगे। नम्रता से ही सबको अपने आगे झुकायेंगे। नम्रचित आत्मा सुखदाता बन सकती है।

28) सदा रुहानियत में रहकर सेवा करो तो चेहरे पर रूहाब दिखाई देगा। रूहाब में रहने वाले नम्रचित होंगे और निर्माण का कार्य करेंगे। जैसे बाप कितना नम्रचित बनकर आते हैं, ऐसे फालो फादर। सेवा में आगे बढ़ते वृत्ति, दृष्टि, बोल और चाल में निर्मानता दिखाई दे, इससे ही बापदादा की व छोटे-बड़ों की दुआयें मिलेंगी जो सफलता दिलायेंगी।

29) निमित्त आत्मा समझने से दो विशेषतायें साकार रूप में दिखाई देंगी - 1. सदा नम्रता द्वारा निर्माण करते रहेंगे। 2. सदा सन्तुष्टता का फल खाते और खिलाते रहेंगे। मैं निमित्त हूँ - इससे न्यारा और बाप का प्यारा अनुभव करेंगे। मैं शब्द समाप्त हो जायेगा। ''मैं'' के बजाए बाबा-बाबा कहने से सबकी बुद्धि बाप की तरफ जायेगी और विशेष शक्ति का अनुभव करेंगे।

30) नम्रता और रहम की भावना अभिमान की महसूसता नहीं कराती। जैसे मुरलियों को सुनते हो तो उसमें अथॉरिटी के बोल हैं लेकिन उससे कोई अभिमान नहीं लगता। तो भल शब्द कितने भी सख्त हों लेकिन अभिमान न लगे, जितनी अथॉरिटी उतना ही नम्रता और रहम भाव हो।

31) कई बच्चे बॉडी कान्सेस के कारण बार-बार कहेंगे 'मैं' यह समझता हूँ, 'मैंने' जो कहा वही ठीक है, 'मैंने' जो सोचा वही ठीक है - यह रॉयल रूप का मैं-पन नम्रचित बनने नहीं देता। यही ''मैं-पन'' कमजोर बना देता है, कमजोर आत्मा कहेगी मैं तो इतना सहन नहीं कर सकती, इतना निर्मान तो नहीं बन सकती, इतनी समस्यायें पार नहीं कर सकती इसलिए पहले ''मैं'' ''मैं'' की बलि चढ़ाओ तब विश्व नव निर्माण का कार्य सम्पन्न कर सकेंगे।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

"वरदान प्राप्त करने का आधार - मन-बुद्धि की स्वच्छता और एकाग्रता"

(गुल्जार दादी - 16-6-07)

दुनिया में अगर वरदान प्राप्त करना होता है, तो अपना मस्तक झुकाना पड़ता है। लेकिन हमको वरदान लेना है तो हमें क्या करना है? बाबा ने भिन्न-भिन्न मुरलियों में यह स्पष्ट किया है कि वरदान लेने के लिए, वरदान अनुभव करने के लिए हमारा मन और बुद्धि आधार है। उसके लिए एक तो हमारा मन एकाग्र होना चाहिए। एकाग्रता से कोई भी चीज़ बुद्धि में डालो तो धारण हो सकती है। हमारा मन अगर एकाग्र नहीं है हलचल में है तो हम वरदान सुनेंगे, बाबा हमें वरदान देगा, सुनने में बहुत अच्छा लगेगा। लेकिन अन्दर उसका फल मिले, मेहनत न करनी पड़े। वरदान लिफ्ट का काम करते हैं। सुनना अलग चीज़ है, स्मृति स्वरूप बनना अलग चीज़ है, इसमें सिर्फ अटेन्शन देने की जरूरत है। तो वरदान के लिए मन की एकाग्रता चाहिए। दूसरा बुद्धि हमारी क्लीन और कलियर हो। अगर बुद्धि में जरा भी सफाई नहीं है और क्लियर नहीं है तो वरदान मिल नहीं सकता। भोलानाथ को अगर राज़ी करना है तो उसकी सहज विधि है, सच्चाई और सफाई।

सच्चाई और सफाई, सच्ची दिल से जो भी अपनी कमजोरी है उसे महसूस करें। कुछ न कुछ तो सभी में कमजोरी है। पुराने संस्कार, जिसको हम नेचर कह देते हैं। उस नेचर को भले हम दूसरों से छिपायें वो बात दूसरी है, बाबा के आगे स्पष्ट हो। बाबा को अपना दिलाराम समझ कर महसूसता से, मिटाने चाहती हूँ, इस दृढ़ता से सुनाओ। ऐसे नहीं बाबा को सुना दो ये मेरी कमजोरी है, आप मिटा दो। बाबा कहता है मैं मदद तो करता हूँ, पर मिटाना तो आपको ही पड़ेगा।

महसूसता और दृढ़ता से संकल्प करें कि मुझे इस कमी को समाप्त करना ही है, बाबा आप मुझे मदद करें मैं करके दिखाऊंगी। यह दृढ़ता तो हमको ही धारण करना पड़ेगा। सच्चाई और सफाई से हम बाबा को अपना बना सकते हैं। वो संस्कार जो मोटे-मोटे तो खत्म हो गये हैं। सूक्ष्म रूप के संस्कार पुरुषार्थ में गैलप नहीं करने देते हैं। जो मैं बुद्धि से करना चाहूँ, बुद्धि और कहाँ भटके नहीं उसको कहा जाता है तीव्र पुरुषार्थ।

हर साल हम बाबा से वायदा करते हैं कि अभी हम करके ही दिखायेंगे। अभी हम अपने आप से पूछूँ, जो बाबा से पिछले साल वायदा किया वो प्रैक्टिकल हुआ है? जिसको हम सूक्ष्म संस्कार वा नेचर कहते हैं, वो खत्म हुआ है? तो वरदान प्राप्त करने का आधार है - मन और बुद्धि हमारी क्लीन क्लियर होना चाहिए। वरदान में तो बाबा कोई न कोई शक्ति देता ही है। तो वरदान में ली हुई शक्तियाँ हमारे जीवन का आधार होना चाहिए। जिस समय हमको जिस शक्ति की आवश्यकता है, उस समय वो शक्ति काम आये। बाबा ने वरदान दिया है कि सब बच्चे मेरे राज़े बच्चे हो। आप आत्मा मालिक हो इन कर्मेन्द्रियों की। हम राजयोगी हैं, प्रजायोगी नहीं। तो बाबा ने पहला वरदान स्वराज्य अधिकारी भव का दिया है। वो वरदान जिस समय चाहिए उसी समय काम में आता है? मन-बुद्धि संस्कार कन्ट्रोल में हैं? हमारा मन और बुद्धि क्लीन और क्लियर है?

बाबा ने कहा मैं तो हरेक बच्चे को नशे में देखना चाहता हूँ! कोई पूछे कि भगवान कहाँ रहता है, तो आप फलक से कह सको कि भगवान मेरे दिल में रहता है। उसको और कोई जगह ही नहीं अच्छी लगती है। तो यह नशे से कह सकते हो ना? अगर आपके मन में रावण की चीज़ है, तो वहाँ बाबा कैसे रहेगा! इतनी हमारी दिल साफ, पुराने संस्कार से मुक्त होनी चाहिए तब हम कह सकेंगे कि बाबा से जो वरदान मिला वह स्वरूप में समाया है और समय पर काम में आता है। पेपर ज्यादातर साथियों और जिज्ञासुओं से ही आता है। पेपर होना जरूरी भी है। जिनसे कनेक्शन है, उनसे ही पेपर होता है।

अगर वरदान प्राप्त करना है तो उसके लिए चेकिंग होनी चाहिए। अपने कमजोर संस्कार, चाहे नाम मात्र हों, बड़े रूप में नहीं हों तो भी वरदान भले सुनने में अच्छा लगेगा लेकिन काम नहीं आयेगा। हमारा सद्गुरु इतना भोला है जो पोस्ट में भी वरदान भेज देता है। फिर भी काम नहीं आयेगा। तो वरदान, शक्तियां, गुण सब जीवन में धारण करना है, इसमें एक भी मिस न हो। एक भी मिस किया तो धोखा मिल जायेगा। अगर आलस्य है, डोन्टकेयर करते हैं, समाने की शक्ति नहीं है, तो हमारे अन्दर जो कमियां हैं वो हमको धोखा दे देंगी। तो अभी हमें सर्व शक्तियों का वरदान लेना है, सर्वगुण सम्पन्न बनना है। हम मास्टर सर्वशक्तिवान हैं, बाबा ने सर्वगुण सम्पन्न देवता पद की प्राप्ति कराई है। हमारे जीवन में सब चाहिए। अगर मर्यादा में हम कम हैं तो हम समान और सम्पन्न नहीं बन सकेंगे। ब्रह्मा बाप ने कितनी मर्यादायें जीवन में धारण की, कितनी सेवायें की। लास्ट दिन तक भी कितने पत्र लिखे। कोई दिनचर्या लास्ट दिन तक भी मिस नहीं की। लास्ट रात्रि को क्लास कराकर बाबा ने अव्यक्त रूप धारण किया। समान बनना माना, गुण और शक्तियाँ मेरे में पूरी-पूरी धारण हों। तो अमृतवेले से लेकर रात्रि तक जो भी श्रीमत है। उसी प्रमाण हमें चलना है। मुरली भी विधि पूर्वक सुननी है। मर्यादायें भी विधि पूर्वक पालन करनी है। हमें मर्यादा पालन करने के लिए भी वरदान हैं। वरदान को स्वीकार करके उसे स्वरूप में लाना है, तो यह चेक करो। सिर्फ वर्णन नहीं करो, स्वरूप बनकर दिखाओ।

तो जैसे बाबा हम बच्चों से चाहता है, वैसे हम बनकर दिखायें। अभी गोल्डन चांस है। जैसे मम्मा का एक ही शब्द था, बाबा का कहना और मेरा करना। बाबा के मुख से जो निकला वो मुझे करना ही है, होना ही है। ऐसा निश्चय प्रैक्टिकल लाइफ में हो। हम लोगों को भी मदर-फादर को पूरा फालो करना ही है। यह भगवान का वरदान है, कोई महात्मा का नहीं। इस एक-एक वरदान में कितनी ताकत भरी हुई है। वो ताकत समय पर हमें काम आये, इसीलिए ही तो मिली है। इसके लिए मन की एकाग्रता, दृढ़ता और बुद्धि की क्लीननेस और क्लियरनेस चाहिए। वो हम सब चेक करें और चेंज करें। दूसरा चेंज में सहयोग दे सकता है लेकिन फिर भी चेंज खुद को ही करना पड़ेगा। अच्छा।

दादी जानकी जी की अनमोल शिक्षायें

“दुआओं की शक्ति से पाप की गठरी सिर से उतर जाये तब हल्केपन का अनुभव होगा”

(दादी जानकी जी (24-7-06)

जिस बात का नियम बन जाता है, नियम का पालन करते रहो तो उसका भी बल जमा होता रहता है। भक्ति में भी कहानियाँ हैं कि कोई नियम को पालन करने वाले बड़े पक्के, आंधी हो या तूफान। बाबा ने जो नियम बना के दिये हैं, उसी आधार पर हमारी जीवन है।

हमारी यह ईश्वरीय फैमिली है, सबसे फ्रैण्डशिप है, उसमें कुछ भी मिक्स नहीं है तो दुआयें जमा होती हैं। जरा सा भी देहभान की बांस वाला इन्द्रसभा में बैठ नहीं सकता। जरा भी देहभान की बदबू न हो। स्वर्ग में तो पीछे की बात है, अभी तो इन्द्रप्रस्थ में रहते हैं जहाँ भगवान वर्षा करते हैं, हरा-भरा करने के लिए, कांटों को फूल बनाने के लिए। बरसात पड़ने से मौसम चेंज हो जाती है, आटोमेटिक फूल खिलने लग जाते हैं। सुन्दर बगीचा बन जाता है। कांटे तो अभी हैं ही नहीं। इतना न्यारापन। फिर एक दो को आप समान बनाना नहीं पड़ता है, आपेही बन जाते हैं। जो ऐसा बनता है उसके वायब्रेशन से, मित्रता भाव से, सच्चाई से, प्रेम से बन जाते हैं। अपने आप वृद्धि होती जाती है। फिर हरेक कहता है - यह लाइफ मुझे अच्छी मिली है, भाग्य से मिली है।

बाबा ने कितना दिया है, कभी उसे बैठकर, खोलके देखो तो सही। ज्वैलरी भले पहनों नहीं पर कभी खोलके देखो तो सही। किसी को मुख से कुछ दान नहीं किया तो कैसे पता चलेगा कितना है आपके पास। चलते फिरते अन्दर से जो भावना है, बाबा ने हमको जितना दिया है वह औरों को देना है। दाता ने इतना दिया है जो देख करके खुश होते हैं। सारे दिन में मेरे से औरों को कितनी खुशी मिली? और मैं ही खुश न रही तो क्या किया? खुशी दी नहीं, चलो खुश तो रहूँ। बाबा सेकेण्ड में कांटा निकाल कर इतनी शक्ति देता है, जो चेहरा चमक जाता है। चेक करो क्या अन्दर कांटा है, जो चेहरा मूंझा रहता है? मेरे में कोई देह भान की या पुरानी बातों की बांस न रहे। खुशबू हेल्दी बनाती है, सवेरे बगीचे में जाओ, थोड़ी सैर करके आओ। बाबा ने टाइम भी हमारी पढ़ाई का ऐसा फिक्स किया है जो सारा दिन माइण्ड हैप्पी रहे। अपने को मुस्कराना सिखाने के लिए, अमृतवेला करने के पहले अपना चेहरा देखो फिर अमृतवेला करने के बाद देखो। अन्तर्मुखता से अपना चेहरा दिखाई देता है। बाह्यमुखता से औरों को देखते हैं। जितना अन्तर्मुखता से अपने को देखेंगे बाबा आपको देखेगा। नहीं तो बाबा आपको देख रहा है और आप दूसरों को देख रहे हो। इधर-उधर देखने वाला बाबा को नहीं देखता है, अपने को नहीं देखता है। बाह्यमुखता माना सब बातें जानने की इच्छा। अभी तो समझते हैं न्यूज़ जरूरी है, बाबा हमको कहता था न्यूज पढ़ने का मतलब? बाबा पढ़ता था सेवा के लिए न कि अन्दर न्यूज़ समाने के लिए। सबसे बड़ा न्यूज़ पेपर है हमारी मुरली। सारे 84 जन्मों की कहानी का न्यूज़ पेपर है।

सन्तुष्टता का सीक्रेट, सन्तुष्ट वो होगा जिसकी नेचर रिच (मूल्यवान) होगी। जो गरीब होगा वो सन्तुष्ट कैसे रहेगा। जो सन्तुष्ट नहीं होगा उसकी वाणी, चेहरा, दृष्टि कैसी होगी? खुद से सन्तुष्ट नहीं है, औरों को सन्तुष्ट करना तो पहाड़ लगता है। खुद सन्तुष्ट रहे, कारण औरों का निकालता है, ये ऐसा है ना। अरे भगवान ने सन्तुष्ट रहने का खजाना दे दिया है, वो खोलके नहीं देखते हैं, पता नहीं कहाँ गुम हो जाता है। मेरे पर मेहरबानी बाबा की है, जिसको बाबा ने इतना खजाना दिया है। और भी सब खुश रहें यह मेरी भावना है। दूसरा जिसको अन्दर कोई इच्छा नहीं होती है वो सन्तुष्ट रहता है। अच्छा बनने की इच्छा भले हो। अच्छा माना बाबा जितना अच्छा। बाबा कहाँ! शिवबाबा कहाँ! हाँ उन जैसा बनना अच्छा है। एक है विदेही, दूसरा है स्नेही। विदेही माना बुद्धि की बीजरूप स्थिति। बीज ही लाइट माइट रहने का पड़ा है। लाइट रहने की माइट बाबा देता है, मैं उसकी सन्तान हूँ। और मैं कहूँ सन्तुष्ट नहीं हूँ.... जो बिचारा भारी है वो असन्तुष्ट है। अगर सदा हल्का है तो सन्तुष्ट है, सन्तुष्ट है तो हल्का है। सोचने वाला भारी है, क्या सोचे, क्या कमी है। आपको कुछ चाहिए तो ले लो ना। मेरा कुछ कम नहीं होगा। गीत है ना ले लो दुआयें माँ-बाप की, गठरी उतरे पाप की। अगर मैं वो दुआयें नहीं लेती हूँ तो पाप की गठरी भी नहीं उतरती है। तो कभी सिर दर्द होता है, कभी भारी होता है। बाबा की दुआ से गठरी उतर गयी तो सिर हल्का हो गया, तो सन्तुष्ट हो गयी। कितना भी किसी के पास है, मैं क्या करूँगी।

बाबा हम बच्चों के लिए स्वर्ग बना रहा है, मुसाफ़िर होकर यहाँ आया है, हम उनके सामने बैठे हैं, वो हमें पढ़ा रहा है, और हमें झुटके आ रहे हैं! खुशी में चेहरा चमकता नहीं है! वो हमें मुक्ति जीवनमुक्ति का वर्सा दे रहा है। मुक्ति के बगैर जीवनमुक्ति का सुख अनुभव नहीं होता है। तो अपनी जीवन ऐसी हो जो अनेकों को प्रेरणा देने लायक हो। अन्दर से उदासी के कोई भी कारण को लेकर दु:खी होना, अपने भाग्य बनाने का समय गंवाना, बड़ा खतरे की घण्टी है। अपना समय नहीं गंवाओ। बाबा कारण खत्म कर देगा, पर हम अपना समय सफल करें।

समय सफल तब होगा जब सेवा करते समझेंगे कि यह सेवा पर्सनल मेरी नहीं, भगवान की है। सेवा में जरा भी अभिमान न आये, जो सेवा की उससे हड्डियाँ मजबूत हो गयी। याद क्या है? याद में और कोई याद नहीं आता है। उनको मेरी याद भले आये, बाबा को याद करने के लिए। सेवा है, दु:ख किसका चला जाये, याद है, दु:ख मेरे पास न आ जाये। याद कभी दु:ख आने नहीं देगी और सेवा है किसी के पास दु:ख आया हुआ चला जाये। दुनिया में है दु:ख अशान्ति, यहाँ है सुख-शान्ति। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

1) हम सबका पहला लक्ष्य है कि हमें कम्पलीट पवित्र राजऋषि बनना है। राजऋषि का अर्थ है पवित्र। योगी का अर्थ है निरन्तर एक बाप के साथ सर्व सम्बन्ध हों अथवा योग हो। जिस योग से विकर्म विनाश हों। तो एक लक्ष्य है हमें पावन बनना है, दूसरा लक्ष्य हुआ कि हमें राजयोगी बनके अपने पास्ट 63 जन्मों के विकर्म विनाश करने हैं। तीसरा है हम तपस्वी हैं, हमें अपने संस्कारों को तपोबल से परिवर्तन करना है। तपस्या का अर्थ ही है हे आत्मा तुम अपने को तप में रखो, जिस तप से आप अपनी कर्मेन्द्रियों पर विजय प्राप्त करो। कर्मेन्द्रियों को शीतल बनाना - उसके लिए ही यह तपस्या है और तपस्या का फाउन्डेशन है ज्ञान। यह नया ज्ञान है, जो हमें वेद शास्त्रों से नहीं मिला। अभी स्वयं सत् बाप ने अपनी सही पहचान दी है।

2) योग का आधार ज्ञान है। जितना ज्ञान पर आधारित होंगे, उतना ही योगबल कमा सकेंगे। ज्ञान का फाउन्डेशन ही हमारी इस जीवन की इमारत का फाउन्डेशन है। ज्ञान का फाउन्डेशन नहीं तो समझो योग का भी फाउन्डेशन नहीं है। तो सबसे पहला फाउन्डेशन है ज्ञान। ज्ञान और योग का फाउन्डेशन फिर है निश्चय। तो हर एक अपने आपसे पूछे कि हमें जो ज्ञान मिला है, उस पर कहाँ तक निश्चय है? ज्ञान की सब प्वॉइन्ट्स पर मेरा निश्चय है या कहीं दिल में प्रश्न है? दूसरा निश्चय है कि हमें कौन पढ़ा रहा है? जिसको दुनिया ढूँढती है - वह बाप हमारे पर कुर्बान है अथवा जिसे दुनिया, ऋषि-मुनि, भगत आदि सब पाने के लिए इतने जप, तप आदि करते हैं, वह हमने जीवन में पाया है। पाया है यह दिल से अनुभव होता है या कहते हैं भगवान पढ़ाता है हाँ, ठीक है! एक है हाँ ठीक है, एक है मुझे भगवान पढ़ाता है - मैं कुर्बान हूँ, वह मेरे पर कुर्बान है। इतना भगवान के ऊपर निश्चय है? सबने भगवान को अपना जीवन सौंप दिया है या अभी ट्रायल कर रहे हो?

3) गीत में कहते हैं प्यार करो, चाहे ठुकराओ... तो भगवान परीक्षायें भी लेता है, ऐसे ही स्वीकार नहीं करता है। उनकी परीक्षायें ऐसी वन्डरफुल आती जो न चाहते भी बुद्धि घूम जावे। जो मालूम भी नहीं पड़ता कि कैसे मैं पेपर में फेल हो गया। उसका टेस्ट पेपर बड़ा वन्डरफुल होता, जिसको समझो तो समझ से परे, सोचो तो सोचने से परे, वर्णन करो तो वर्णन से परे होता, लेकिन होता टेस्ट की तरह है। अगर टेस्ट पेपर नहीं होता तो आज आश्चर्यवत सुनन्ती, पश्यन्ती, कथन्ती और आश्चर्यवत भागन्ती नहीं होते। तो यह टेस्ट पेपर हर एक का होता है जिसमें अनेक बातें आती हैं।

4) जैसे जौहरी पहले आई-ग्लास से टेस्ट करता कि हीरा कैसा है! सोने को भी घिसता है तब पता चलता कि रीयल सोना है या आर्टिफिशियल है, दिखाऊ सोना है या सच्चा सोना है! आजकल अमेरिकन हीरे अमेरिकन सोना बहुत निकल गया है। आज की दुनिया का आर्टिफिशियल भभका बहुत है लेकिन हम इस दुनिया के आर्टिफिशियल भभकों से बहुत परे हैं। तो सबसे पहले चेक करो कि प्राण भले जायें लेकिन हे बाबा तेरे साथ जो मेरा प्रण है वह नहीं छूटे, चाहे मारो चाहे ठुकराओ –हम आपके होकर रहेंगे, ऐसा वायदा पक्का है? बाबा कहता

था, मैं आर्डर करूंगा कि तुम योगी नहीं हो गेट आउट। और बरोबर तुम्हारी गलतियाँ साबित करके कहूँगा गेट आउट.. तो क्या तुम गेट आउट होंगे या द्वार पर प्राण छोड़ेंगे। बाबा ऐसे एक हंसी से बोलता था। परन्तु बाबा देखता था कि कहाँ तक इसका प्रण और प्राण है? एक है प्रण एक है प्राण। तो कहा जाता प्राण भले जायें परन्तु प्रण न जाये। तो यह है निश्चय की परख कि हमारा निश्चय कहाँ तक है?

5) बाबा के निश्चय की टेस्टिंग है - सर्वन्श त्यागी। अगर सर्वन्श त्यागी हो तब तो निश्चय है। अगर सर्वन्श त्याग नहीं है तो निश्चय में कमी है, गड़बड़ है। तो यह सब सोचो, विचारों कि मेरे में त्याग और तपस्या की शक्ति कितनी है? त्याग माना सब बातों का त्याग, नींद का त्याग, खाने-पीने का त्याग, आराम का त्याग, सुख-सुविधाओं का त्याग, इनसे भी बड़ा त्याग होता है बुद्धि का त्याग, मनमत का त्याग, संगदोष का त्याग, इगो का त्याग, देह-अभिमान का त्याग, मन की इच्छाओं का त्याग, तन की इच्छाओं का त्याग यह बहुत बड़े त्याग होते हैं। तो यह सब त्याग मैंने किये हैं या नहीं? मन की इच्छायें रही हुई तो नहीं हैं? जैसे भक्त लोग श्रावण मास में बहुत करके व्रत रखते हैं, कई तो 31 दिन व्रत रखते हैं, अन्न-जल नहीं लेते हैं तो आप लोगों की भट्टी भी यह एक व्रत है। तो भट्ठी में चेक करो कि ऐसे त्यागी तपस्वी हैं? जब तक त्याग तपस्या नहीं है तब तक सेवाओं में भी सफलता नहीं होगी।

6) कई बार सेवा का भी हमें त्याग करना पड़ता है। कोई कोई करते सेवा हैं परन्तु सेवा करते भी मान की इच्छा रहती है, तो वह सेवा सफल नहीं मानी जाती है। तो हमें सब कुछ त्याग रख करके चलना पड़ता है। संगठन के सहयोग से चलने की भी बहुत बड़ी शक्ति चाहिए। सेवा करने की शक्ति है परन्तु इन्डिपेन्डेन्ट की शक्ति है, सहयोग के संगठन की शक्ति नहीं है तो बड़ा मुश्किल होता है क्योंकि आखिर चलना संगठन में है इन्डीविज्युअल में नही रहना है, तो आप सभी को अपनी टेस्ट करनी चाहिए।

7) एक बाबा ही हमारा संसार है, एक बाबा के सिवाए कोई संसार नहीं। ऐसा कोई संसार न बने जो फिर रोना पड़े इसलिए अपने आपसे पूछो कि नैया की पतवार अपने हाथ में है या बाबा के हाथ में है? अगर पतवार खिवैया को दिया तो खिवैया जहाँ भी ले जावे, फिर पतवार अपने हाथ में तो नहीं है। तो यह जीवन नैया की पतवार तेरे हाथों में है। तो अपने आपको देखो कि मुझे कहाँ तक निश्चय है? अगर निश्चय है तो परिवर्तन है? अगर परिवर्तन नहीं तो फिर निश्चय भी नहीं है। इस परिवर्तन की विधि है निश्चय और फिर निश्चय की विधि है - प्यार। अगर मेरा बाबा से प्यार है माना निश्चय है, अगर बाबा पर निश्चय है माना प्यार है। अगर निश्चय नहीं है, प्यार नहीं है तो फिर कुछ नहीं है। तो मेरा बाबा से कितना प्यार है? कितना बाबा से दुलार है? यह अपने-अपने अनुभव से पूछो।

8) हमें तो कई बार आप जैसे योगियों को देख जरूर दिल में आता कि यह सभी अपनी जीवन हथेली पर लेकर पहुँचे हैं। कोई ज्ञान से आकर्षित हो आये हैं, कोई बाबा के प्यार में आये हैं, या सेवा से प्यार है इसलिए आये हैं..... परन्तु कई बार चलते-चलते थक जाते हैं क्योंकि ज्ञान-योग का फाउण्डेशन नहीं होता तो त्याग भी नहीं होता है। जैसे टांगे थक जावें तो आराम करना चाहेंगे, बैठना चाहेंगे। ऐसे ही फिर मन रूपी टांगे थक जाती हैं तो फिर किनारा करने को रास्ता ढूँढते हैं। आये थे तो बहुत अच्छा शौक था, परन्तु ऐसा नहीं समझा कि इतना त्याग करना पड़ेगा, इतना संगठन में रहना पड़ेगा, बहुत डिफीकल्ट है। फिर यह हलचल मन में पैदा होती है। भाव-स्वभाव, संगठन... किसी एक बात का भी संशय आया तो फिर उनकी अन्त ही नहीं होती है फिर हर बात में सवाल, हर बात में संशय, हर बात में कमजोरी, हर बात में संस्कारों का टक्कर बढ़ता जाता है। फिर आखिर वह घड़ी आ जायेगी - कहाँ माया से हार खा लेंगे, फिर कहेंगे ठीक है, मेरे को मुश्किल लगता है फिर पुरानी दुनिया याद आयेगी, लौकिक याद आयेगा। तो अब यह पूछना है कि हम नष्टोमोहा हैं? या लौकिक में सम्बन्ध का आकर्षण या सूक्ष्म मोह तो नहीं है? आप मुये मर गयी दुनिया। बाबा ने शुरू में 14 साल की भट्टी में हम सबको यह पाठ ऐसा पक्का कराया जो कभी कोई संकल्प भी नहीं आवे। मैं समझती हूँ - कभी एक संकल्प भी नहीं आया होगा कि ऐसा भोजन बना है, जो मिला सो खाना है। बाबा जो खिलाये सो सही। चाहे दाल भात खिलाये, चाहे सूखा फुलका खिलाये, चाहे घी का हलवा खिलाये। हम हैं योगी लोग। हमारा मतलब योग से है और कोई बात से नहीं है।

संगठन में जो छोटी-बड़ी परीक्षायें आती हैं उसमें अपनी स्थिति निश्चयबुद्धि, विजयन्ति हो। मरना तो मरना फिर जीना नहीं, ऐसे सोच-समझकर अपनी जीवन का फैंसला करना है। अगर कोई समझता है मेरे में इतनी शक्ति नहीं है तो वह अपना स्वयं जज करे। ऐसे नहीं फिर पीछे पछताना पड़े। अच्छा। ओम् शान्ति।